(5) नागरिकशास्त्र शिक्षण में किन शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग (7)
किया जाता है? किन्हीं दो पर उदाहरण सहित अपने विचार व्यक्त
कीजिए।
DSPMU-2018

What teaching aids are uses in teaching Civics?
Express your views on any two with examples.

OR

नागरिकशास्त्र शिक्षण में विभिन्न प्रकार के श्रव्य-दृश्य सहायक
सामग्रियों पर (संक्षेप में) प्रकाश डालिए।

Highlight brief various types of Audio-Visual Aids in
Civics teaching.

Unit-V, प्रश्न संख्या, पृष्ठ 26

"सहायक सामग्री अनुभव प्रदान करती है और शब्द एवं वस्तु में सम्बन्ध स्थापित करती है। यह विद्यार्थियों के समय में बचत करती है, सरल एवं विश्वसनीय सूचना प्रदान करती है, सौन्दर्यात्मक ज्ञान का विकास एवं अभिवृद्धि करती है, सुखद मनोरंजन प्रदान करती है, जटिल प्रदत्तों को सरलतम दृष्टिकोण प्रदान करती है, कल्पना को उत्तेजित करती है तथा छात्रों की निरीक्षण शक्ति का विकास करती है।"

—एम. पी. मफात्

("Material aids furnish experience, facilitate the association of object and word, save pupil's time, provide simple and authentic information, enrich and extend one's appreciation, furnish pleasant entertainment, provide a simplified view of complicated data, stimulate one's imagination and develop pupil's power of observation."

—M. P. Moffatt)

वर्तमान युग में शिक्षा सिर्फ सूचनायें प्रदान करने या ज्ञान की अभिवृद्धि करने का साधन नहीं है वरन् शिक्षा वह प्रक्रिया है जो बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करती है और विकास की इस प्रक्रिया के लिए यह आवश्यक है कि इसे विविध प्रकार से आकर्षित करने योग्य बनाया जाये जिससे छात्र इस प्रक्रिया में रुचि लें। शिक्षा की इस प्रक्रिया को आकर्षक, रोचक व लाभप्रद बनाने में सहायक सामग्री का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वास्तव में सहायक सामग्री वह साधन है जिसके द्वारा कठिन ज्ञान को सरल, स्पष्ट व रोचक ढंग से छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। एक प्रसिद्ध चीनी कहावत है कि "एक बार देखना सौ बार बोलने से अच्छा होता है।" (One seeing is worth a hundred telling) डॉ. जे. जे. वेबर के एक अनुमान के अनुसार हम जो भी ज्ञान अर्जित करते हैं, उनमें 40% वह प्रत्यय होते हैं जिन्हें हमने दृश्य अनुभवों के द्वारा ग्रहण किया है, 25% वह अनुभव हैं जो हमारे श्रवण पर आधारित होते हैं, 17% वह हैं जो स्पर्श या भावनाओं पर आधारित हैं, 15% अन्य शारीरिक संवेदनाओं पर आधारित हैं व 3% स्वाद व सूँघने में। इस अनुमान के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि हमारे कुल 65% अनुभव ऐसे हैं जो श्रव्य व दृश्य से सम्बन्ध रखते हैं अतः सीखने की प्रक्रिया को दृढ़ बनाने में श्रव्य सामग्री का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है।

Scanned with CamScan

बाइनिंग और बाइनिंग ने श्रव्य-दृश्य सामग्री का अर्थ बताते हुए कहा है—

"सीखने का कोई भी तरीका जिसमें छात्र अपनी श्रव्य व दृश्य इन्द्रियों का प्रयोग करता है, उन्हें हम श्रव्य-दृश्य सामग्री कहते हैं।"

("Every type of device of teaching by which the pupil learns through the senses of vision and auditory is audio-visual aid."

— Binning and Binning)

वास्तव में शिक्षण में उपयुक्त होने वाली सहायक सामग्री अध्यापक के लिए छात्रों के ज्ञान को, तथ्यों को, क्षमताओं को हस्तान्तरित करने का एक सशक्त माध्यम है। विभिन्न शिक्षाविदों ने सहायक सामग्री के महत्त्व व आवश्यकताओं के बारे में निम्न विचार प्रस्तुत किये हैं—

श्रव्य-दृश्य सामग्री की आवश्यकता व महत्त्व (Need and Importance of Audio-Visual Aids) –

1. यह प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित होती हैं। अतः इनके द्वारा प्रदान किया गया ज्ञान स्थायी होता है।

2. यह सामग्री छात्रों में आलोचनात्मक चिन्तन की क्षमता को उत्पन्न करती है।

3. इनके प्रयोग द्वारा हम भूतकालीन वस्तुओं को वर्तमान में दर्शा सकते हैं, उदाहरणार्थ भारतीय राष्ट्रीय ध्वज का यदि हम इतिहास पढ़ायें तो विभिन्न रूपों को लेते हुए किस प्रकार वर्तमान राष्ट्रीय ध्वज का रूप स्थापित हुआ, इसे हम दृश्य सामग्री द्वारा प्रस्तुत कर सकते हैं।

4. दूरस्थ वस्तुओं, व्यक्तियों आदि का ज्ञान भी हम इसके द्वारा सफलता से करा सकते हैं। जापान के आवास हम पढ़ाना चाहते हैं तो लकड़ी के छोटे-छोटे आवास मॉडल रूप में हम छात्रों को दिखा सकते हैं।

5. इसके प्रयोग द्वारा हम छात्रों को बाह्य वस्तुओं का ज्ञान कराते हैं जिससे वह कम मेहनत व कष्ट से अधिक से अधिक ज्ञान अर्जित कर लेते हैं।

6. बहुत कम प्रयास से छात्रों का ध्यान शिक्षण की ओर केन्द्रित किया जा सकता है।

7. सहायक सामग्री अध्यापक के लिए शिक्षण की एक पूरक रूप में होती है व यह कक्षा शिक्षण को विविधता प्रदान करती है।

8. श्रव्य-दृश्य सामग्री कक्षा के वातावरण में परिवर्तन लाकर वातावरण को सरस बनाती है।

9. यदि कोई सामग्री ऐसी है जिसका प्रयोग छात्र करते हैं तो यह छात्रों को वस्तुओं के उपयुक्त प्रयोग के अवसर प्रदान करती है और क्षण भर के लिये उन्हें यह आभास देती है कि यह उनकी अपनी वस्तु है, उदाहरणार्थ मतदान प्रक्रिया में हम छात्रों को बैलट

Scanned with CamScanner

पेपर बाँटकर मोहर लगाना सिखायें तो छात्रों को उससे पाठ के प्रति अपनत्व भाव लगने लगता है।

10. यदि हम वी. सी. आर. के द्वारा छात्रों को कोई चित्र दिखाते हैं जो विश्व के विभिन्न देशों से या अपने देश से सम्बन्ध रखता है तो हम छात्रों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव और देश-प्रेम की भावना को स्थापित कर सकते हैं।

11. मन्द गति से सीखने वाले छात्रों के लिए यह शिक्षण का बहुत ही प्रभावशाली तरीका है।

12. इसके द्वारा छात्रों में निरीक्षण व श्रवण शक्ति का विकास किया जा सकता है।

13. इसके प्रयोग के द्वारा व्यक्तिगत भिन्नता की संतुष्टि होती है।

14. यह अमूर्त अवधारणाओं को मूर्त रूप प्रदान करता है।

15. यह छात्रों की कल्पना शक्ति के विकास में सहायक है।

16. इसके प्रयोग द्वारा छात्रों की स्मरण शक्ति दृढ़ होती है।

विभिन्न विद्वानों ने शिक्षा में प्रयोग होने वाले दृश्य-श्रव्य साधनों की आवश्यकता व महत्त्व पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है।

1. **क्रो एण्ड क्रो** के अनुसार—"श्रव्य-दृश्य उपकरण सीखने वालों को व्यक्तियों, घटनाओं, वस्तुओं और कारण तथा प्रभाव सम्बन्धों के नियोजित अनुभवों से लाभ उठाने का अवसर देते हैं।"

2. **बाइनिंग एण्ड बाइनिंग** के अनुसार—"श्रव्य-दृश्य सामग्री वे साधन हैं जो पाठ को रोचक बनाते हैं।"

3. **ई. बी. वेस्ले** के अनुसार—"दृश्य-श्रव्य साधन अनुभव प्रदान करते हैं। उनके प्रयोग से शब्दों व वस्तुओं का सम्बन्ध सरलतापूर्वक जुड़ जाता है, बालकों के समय की बचत होती है तथा उनकी सहायता से सरल तथा सही-सही बातों का पता चलता है। उनसे जहाँ बालकों का मनोरंजन होता है, वहीं से विभिन्न वस्तुओं की प्रशंसा करना भी सीख जाते हैं। वे जटिल बातों को सरल ढंग से पेश करते हैं। बालकों की कल्पना शक्ति को प्रेरित करते हैं और उनकी निरीक्षण शक्ति को विकसित करते हैं। सम्भव है, ऐसी सहायक सामग्री की व्यवस्था तो करनी पड़े, पर उनके लिए अनुवादक की कोई आवश्यकता नहीं होती क्योंकि उनमें प्रकृति, रंग, स्थिति तथा गति सम्बन्धी सर्वत्र पाई जाने वाली भाषा प्रयुक्त होती है। इस प्रकार सीखने के लिए राजमार्ग का काम दे सकती है।"

4. **मेककल्सकी** के अनुसार—"उचित प्रकार से प्रयोग किये जाने वाली श्रव्य-दृश्य सामग्री अनेकों भ्रमों को उत्पन्न नहीं होने देती है।"

सहायक सामग्री का प्रयोग करते समय किन बातों को ध्यान में रखा जाये—

Scanned with CamScanner

अब एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि कोई भी अध्यापक जब सहायक सामग्रियों का प्रयोग करे तो उसे किन बातों को ध्यान में रखना चाहिये ? इस सम्बन्ध में निम्न सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

1. प्रयोग की जाने वाली सहायक सामग्री छात्रों की आयु, बुद्धि व अनुभव के अनुकूल होनी चाहिए।

2. सहायक सामग्री विषय व उपविषय के अनुकूल होनी चाहिये।

3. सहायक सामग्री को छात्रों को सीखने के उचित अवसर प्रदान करने चाहिये और उन्हें सीखने हेतु उचित प्रेरणा दी जानी चाहिए।

4. सहायक सामग्री के प्रयोग में अध्यापक या छात्र दोनों का ही समय व्यय नहीं होना चाहिए।

5. इन्हें शिक्षक की सहयोगी समझना चाहिये। यह उसकी पूरक नहीं हैं।

6. इन्हें लक्ष्य न मानकर लक्ष्य-प्राप्ति का साधन समझना चाहिए।

7. यह शिक्षण की बुराइयों को छिपाने का साधन नहीं चूँकि यह अध्यापक या पुस्तकों का स्थान नहीं ले सकती है।

8. सहायक सामग्री को आकर्षक व लाभप्रद होना चाहिये।

9. इनकी उचित व्याख्या उचित स्थान पर अध्यापक द्वारा की जानी चाहिए।

10. सहायक सामग्री को उचित ढंग से प्रस्तुत व संरक्षित किया जाना चाहिये।

11. इन्हें सज्जा के रूप में प्रयोग नहीं करना चाहिए वरन् पाठ प्रस्तुतीकरण के साथ इन्हें स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत करना चाहिए।

12. इसका प्रयोग पाठ के जटिल व कठिन तथा सूक्ष्म भावों को स्पष्ट करने हेतु होना चाहिए।

13. इसमें विभिन्नता होनी चाहिए चूँकि एक ही प्रकार की सामग्री का प्रयोग बार-बार करने से छात्र ऊबने लगते हैं।

14. बहुत अधिक खर्चीली सहायक सामग्री का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

15. प्रयोग के पश्चात् सहायक सामग्री को हटाकर रख देना चाहिए।

16. एक पाठ में बहुत अधिक सहायक सामग्री का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

17. सहायक सामग्री का आकार इतना बड़ा होना चाहिए कि कक्षा के सभी छात्र उसका अवलोकन कर सकें।

18. जो वस्तु अनुपलब्ध हो, उसी के लिये हमें सहायक सामग्री का प्रयोग करना चाहिए।

Scanned with CamScanner

नागरिकशास्त्र के अन्तर्गत हम विभिन्न प्रकार की सहायक सामग्रियों का प्रयोग करते हैं परन्तु किस पाठ के लिए किस प्रकार की सहायक सामग्री का प्रयोग किया जाये, किस प्रकरण के लिए किस प्रकार की सहायक सामग्री का प्रयोग किया जाये, किस प्रकार के मानसिक स्तर के छात्रों के लिए किस प्रकार की सहायक सामग्रियों का प्रयोग किया जाये, इसकी जानकारी होना अध्यापक के लिए आवश्यक है। इन सभी बातों व प्रश्नों पर विचार करने से पूर्व हमारे लिए यह जरूरी है कि हम सहायक सामग्रियों के विभिन्न प्रकारों की चर्चा करें।

सहायक सामग्रियों के प्रकार अथवा वर्गीकरण के सम्बन्ध में एडगर डल ने कॉन ऑफ एक्सपीरियन्स (Cone of Experience) प्रस्तुत किया है जो इस प्रकार है—

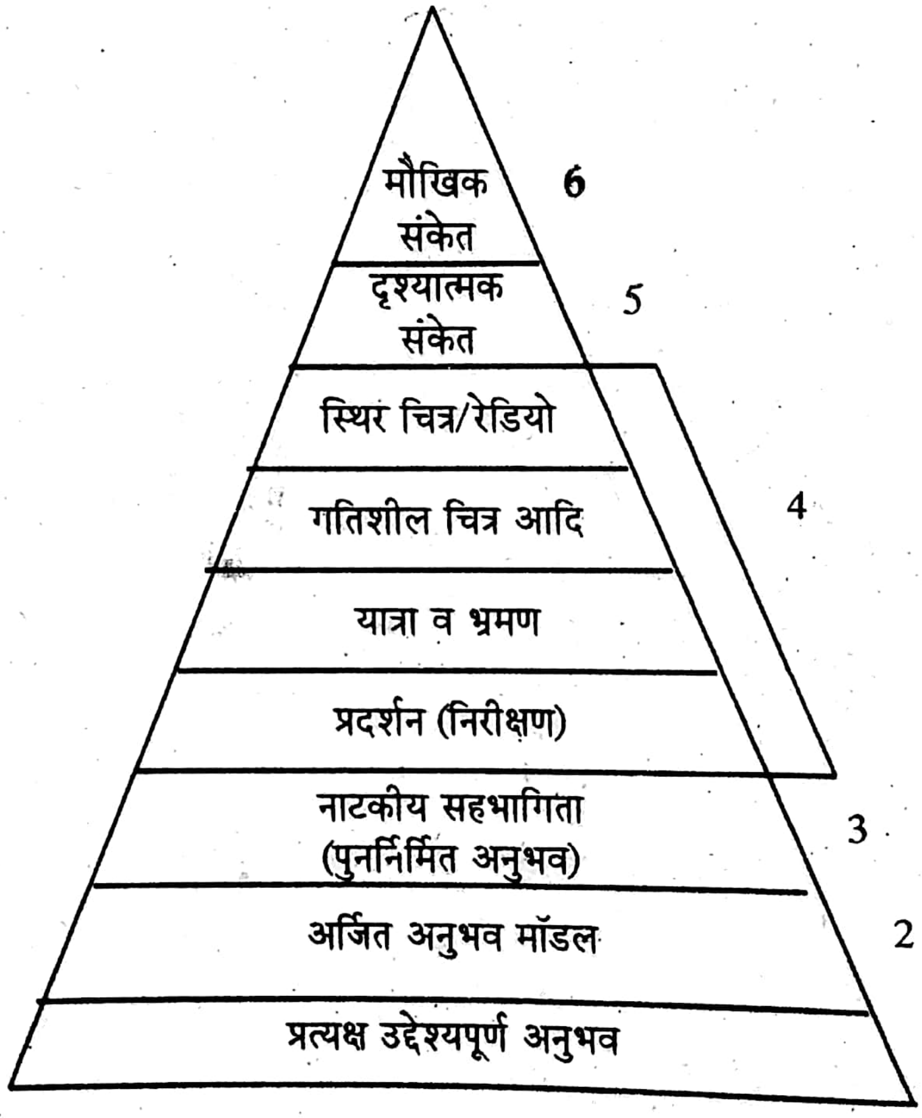

इनका विचार है कि हम इस वर्गीकरण को बहुत अधिक दृढ़ नहीं कर सकते। यह एक-दूसरे से सम्बन्ध रखते हैं। एक अन्य वर्गीकरण इस प्रकार है—

1. वह सहायक सामग्री जिनमें हम कानों के द्वारा सुनकर ज्ञानार्जन करते हैं अर्थात् श्रव्य सामग्री।

2. वह सहायक सामग्री जिन्हें हम आँखों द्वारा देखते हैं अर्थात् दृश्य सामग्री।

Scanned with CamScan

सहायक सामग्रियों के प्रकार

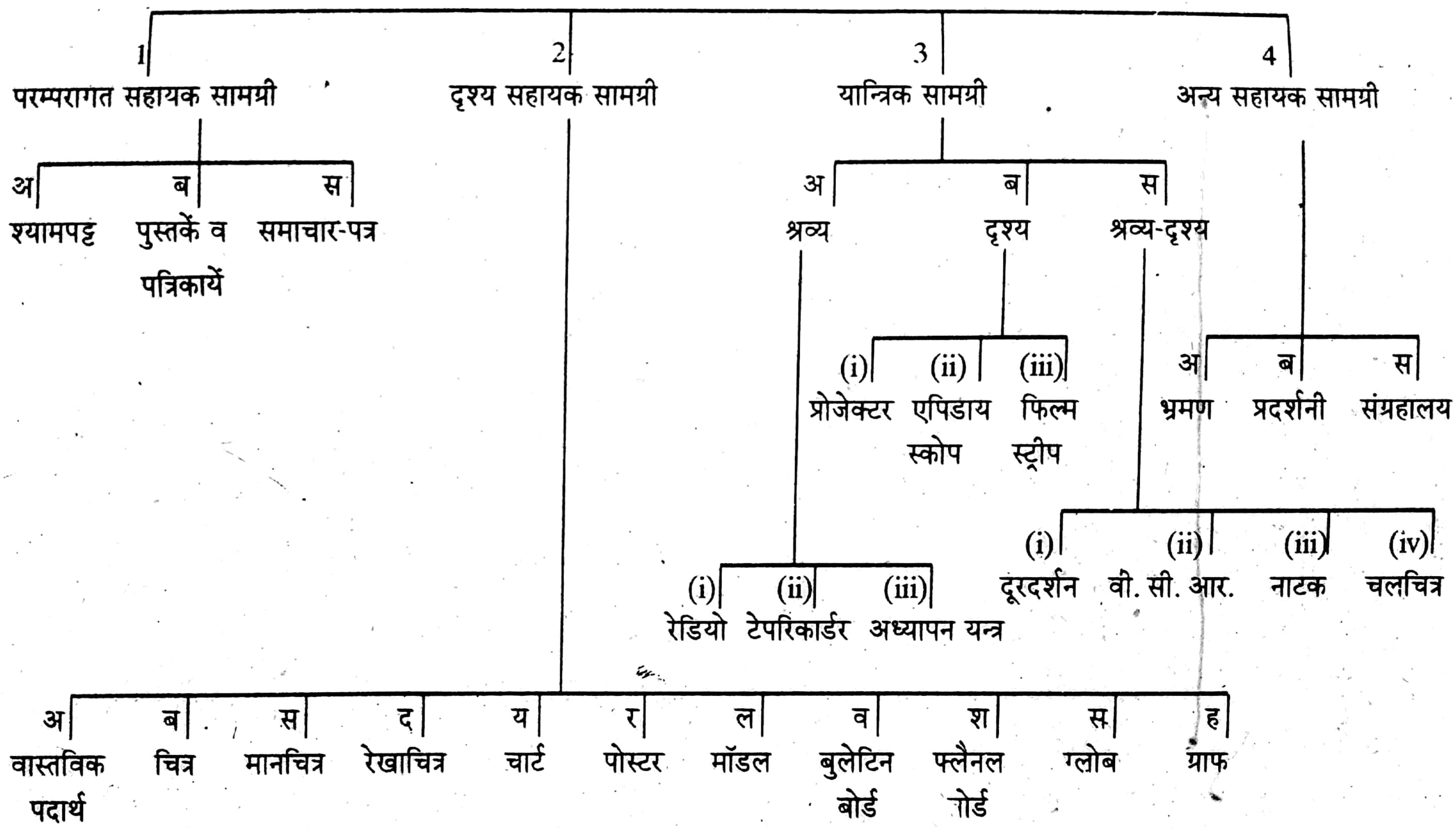

Scanned with CamScanner

3. तीसरा सामग्री वह हैं जिनमें हम कानों व आँखों का संयुक्त रूप में प्रयोग करते हैं अर्थात् श्रव्य-दृश्य सामग्री।

4. वह सामग्री जिनमें हम क्रिया को संलग्न करते हैं।

नागरिकशास्त्र विषय के अन्तर्गत प्रयोग की जाने वाली सहायक सामग्रियों को हम निम्न प्रकार से वर्गीकृत कर सकते हैं—

1. **परम्परागत सहायक सामग्रियाँ** (Traditional Material Aids)–

(अ) श्यामपट (Blackboard or Chalkboard)– कक्षा शिक्षण में श्यामपट एक बहुत ही सशक्त उपकरण है चूँकि अध्यापक अपने कथनों के माध्यम से जिन सूचनाओं को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करता है, उसके महत्त्वपूर्ण अंश वह श्यामपट पर अंकित करता जाता है। अतः श्यामपट कथनों को स्पष्ट व बोधगम्य बनाता है। परन्तु दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि भारतवर्ष में शिक्षा के इस उपकरण पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया जाता अतः इसकी स्थिति बहुत ही शोचनीय है। आज प्राथमिक स्तर पर अनेकों विद्यालय ऐसे हैं जहाँ श्यामपट नाम की कोई चीज आपको दिखाई नहीं देगी। कोठारी शिक्षा आयोग से लेकर शिक्षा की नई नीति में इस पर विचार व्यक्त किये गये हैं और इसकी सिफारिश भी व्यक्त की गई है कि प्रत्येक विद्यालय में तुरन्त ही एक अच्छे श्यामपट की व्यवस्था की जाये।

श्यामपट कोई साज-सज्जा की या पाठ को आकर्षक बनाने की सहायक सामग्री नहीं है वरन् स्वच्छता, शुद्धता एवं तीव्रता के मानक स्थापित करने में इसका महत्त्व है। यह एक ऐसा साधन है जो कक्षा में सदैव उपलब्ध रहता है। **मैककल्सकी** ने श्यामपट के सम्बन्ध में कहा है, "श्यामपट को महत्त्वपूर्ण दृश्य उपकरण माना जाता है। यह विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले प्रायः प्रत्येक विषय को मानस-पटल पर अंकित करने में सहायता दे सकता है। यह केवल साधन है, साध्य नहीं। इसका मुख्य उद्देश्य शुद्ध मानसिक विचारों को विकसित करना है।"

श्यामपट के प्रकार—श्यामपट प्रायः तीन प्रकार के होते हैं जो इस प्रकार हैं—

श्यामपट के प्रकार

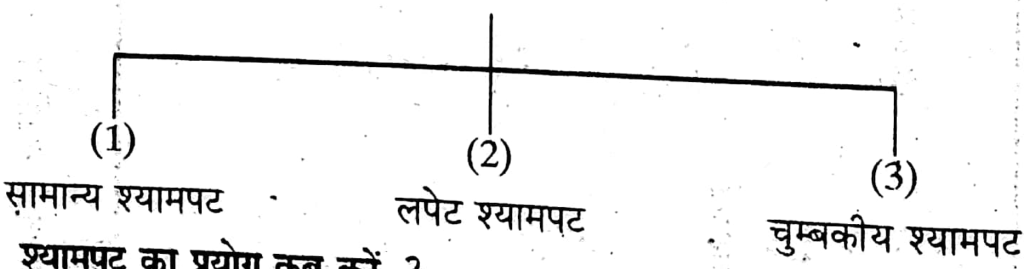

श्यामपट का प्रयोग कब करें ?—

1. रूपरेखा का विकास करने हेतु इसका प्रयोग शिक्षण बिन्दु को लिखने के लिए किया जाना चाहिए।

2. किसी नाम, स्थान विधि या शब्द पर अधिक बल देने के लिए।

3. दो या अधिक तथ्यों में सम्बन्ध और विभिन्नता स्पष्ट करने के लिए इसका प्रयोग करना।

4. मानचित्र, रेखाचित्र, समय चित्र आदि को बनाने हेतु इसका प्रमुख रूप से प्रयोग करें।

Scanned with CamScanner

5. छात्रों को गृह कार्य देने हेतु प्रयोग करें।

6. किसी भी नियम व परिभाषा को सदैव श्यामपट पर लिखना चाहिए।

7. सारांश लिखने हेतु।

8. किसी वस्तु के क्रम को व्यवस्थित करने के लिए।

श्यामपट का प्रयोग कैसे करें ?—

1. श्यामपट कक्षा में उचित स्थान पर रखा होना चाहिए जिससे सभी छात्र उसे देख सकें।

2. अध्यापक का यह भी उत्तरदायित्व है कि वह श्यामपट साफ हो, तभी उसका प्रयोग करे।

3. श्यामपट पर सीधी पंक्तियों में स्पष्टता व शुद्धता के साथ लिखा जाये।

4. श्यामपट पर संक्षिप्त वाक्य लिखे जाने चाहिए।

5. थोड़ा-सा हाशिया छोड़कर लिखना चाहिए।

6. लिखते समय कक्षा की ओर दृष्टि रखनी चाहिए। पाठ करके कभी नहीं लिखना चाहिए।

7. श्यामपट पर जो भी लिखा जाये, अध्यापक द्वारा उसका मुखोच्चारण करते जाना चाहिए अर्थात् लिखते समय उसे मौन नहीं रहना चाहिए।

8. श्यामपट पर अंकित अक्षरों का आकार सुडौल हो। अध्यापक को न तो बहुत बड़े अक्षर लिखने चाहिए और न ही बहुत छोटे।

9. श्यामपट पर क्रमबद्ध या व्यवस्थित ढंग से लिखना चाहिए। यह नहीं कि कभी बीच में लिख दिया, कभी नीचे व कभी कहीं।

10. शिक्षक को श्यामपट को ढँककर खड़े होकर नहीं लिखना चाहिए। उसे ऐसे खड़ा होना चाहिए कि छात्र श्यामपट देख सकें। जहाँ तक हो, उसे 45° के कोण की स्थिति लेनी चाहिए।

11. अध्यापक को छात्रों को लिखने का समय देना चाहिए।

12. अध्यापक को कक्षा छोड़ने से पूर्व श्यामपट साफ कर देना चाहिए परन्तु साफ करने हेतु डस्टर या कपड़े का ही प्रयोग करना चाहिए।

13. श्यामपट पर लिखते समय उसे वर्तनी व व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियों के प्रति सजग रहना चाहिए।

14. श्यामपट पर लिखने का अभ्यास छात्रों को व अध्यापक को होना चाहिए जिससे लिखने में अधिक समय न लिया जाये।

15. लिखने हेतु रंगीन चॉक का प्रयोग नहीं करना चाहिए। रंगीन चॉक आकर्षक बिन्दुओं के लिए प्रयोग की जा सकती है।

Scanned with CamScan

श्यामपट के लाभ—

1. यह सहायक सामग्री अध्यापक की सहयोगी है।
2. यह कम खर्चीली सहायक सामग्री है।
3. इसका प्रयोग सरलता व सुगमता के साथ किया जा सकता है।
4. इसका प्रयोग हम कई बार कर सकते हैं।

(ब) पुस्तकें व पत्र-पत्रिकायें (Books and Magazines)—पुस्तकें व पत्र-पत्रिकाएँ हमारा ज्ञानवर्द्धन करने का एक सशक्त माध्यम हैं। पुस्तकें चाहे वह पाठ्य-पुस्तक के रूप में हों अथवा सन्दर्भ पुस्तकों के रूप में, विद्यालय में इनका प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया जाता है परन्तु पुस्तक का प्रयोग करते समय यह ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि पुस्तकें महत्त्वपूर्ण अवश्य हैं परन्तु वह सब कुछ नहीं हैं।

अच्छी पुस्तकों के गुण—

1. पाठ्य-पुस्तक या अन्य पुस्तकें जिनका हम प्रयोग कर रहे हैं, उन्हें नागरिकशास्त्र शिक्षण के उद्देश्यों के अनुरूप होना चाहिए।

2. पुस्तक की भाषा शैली छात्रों के मानसिक स्तर के अनुरूप होनी चाहिए।

3. छात्रों को पुस्तकें सरलतापूर्वक सस्ते दामों में उपलब्ध होनी चाहिए।

4. पुस्तकों में उपयुक्त उदाहरण, चित्र, रेखाचित्र व मानचित्र प्रस्तुत किये जाने चाहिए।

5. पुस्तकों का आकार, बाह्य पृष्ठ व कागज आकर्षक व अच्छा होना चाहिए।

6. पुस्तकों में समयानुसार संशोधन किया जाना चाहिए जिससे छात्रों को नवीनतम ज्ञान प्रदान किया जा सके।

7. पुस्तकों की छपाई भी इस प्रकार की होनी चाहिए कि उसे आसानीपूर्वक पढ़ा जा सके।

8. पुस्तकों के लेखक अनुभवी व प्रतिष्ठित हों व उस विषय से प्रत्यक्ष रूप में सम्बन्ध रखते हों।

9. पाठ्य-पुस्तकों की भूमिका ऐसी हो जिससे पाठकगण को पुस्तक के मुख्य गुणों तथा उसकी विशिष्ट विशेषताओं का ज्ञान हो सके।

10. पाठ्य-पुस्तकों में उपविषयों को क्रमबद्ध रूप में अथवा सरल से कठिन के सूत्र को ध्यान में रखकर व्यवस्थित किया जाये।

11. पाठ्य-पुस्तकों में प्रत्येक अध्याय के पश्चात् उसका सारांश दिया जाये।

12. उसके अन्त में प्रश्नों की चर्चा भी की जानी चाहिए।

पाठ्य-पुस्तक के लाभ—

1. छात्रों को अध्ययन की दिशा में प्रेरित किया जाना चाहिए।
2. यह अध्यापक व छात्रों को लक्ष्य-प्राप्ति की ओर उन्मुख करती है।
3. यह छात्रों को पढ़ने के प्रति प्रोत्साहित करती है।

Scanned with CamScan

4. इनकी सहायता से छात्रों को व्यवस्थित व क्रमबद्ध विषय-वस्तु एक ही स्थान पर उपलब्ध हो जाती है।

5. यह शिक्षण को सभी के लिए समान बनाती है अथवा शिक्षण प्रक्रिया को एकरूपता प्रदान करती है।

इसका प्रयोग कब करें ?—

1. अध्यापक को पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग अपने द्वारा प्रदान किये गये ज्ञान के पूरक रूप में करना चाहिए।

2. बच्चों को पाठ्यक्रम को पूरा करवाने हेतु इसका प्रयोग करना चाहिए।

3. गृहकार्य को पूरा करने हेतु इसका प्रयोग किया जाये।

इसका प्रयोग कैसे करें ?—

1. पुस्तकें साधन के रूप में प्रयोग की जानी चाहिये। इन्हें साध्य नहीं मान लेना चाहिए।

2. पुस्तकें कभी भी अध्यापक का स्थान नहीं ले सकतीं, यह विचार अध्यापक व छात्र दोनों के ही मस्तिष्क में स्पष्ट होना चाहिए।

3. पुस्तकें अन्तिम सत्ता नहीं हैं। उनमें यदि कोई छपाई सम्बन्धी त्रुटि रह गई है या तथ्यों में संशोधन नहीं हो पाया है तो छात्रों को उनमें परिवर्तन करने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

पत्र-पत्रिकायें—नागरिकशास्त्र शिक्षण के अन्तर्गत मैगजीन का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। कुछ पत्रिकायें, जैसे—मिरर, इण्डिया टुडे तो ऐसी हैं जो पूर्ण रूप से राजनैतिक विचारधाराओं पर आधारित हैं। इनको पढ़ने के लिए छात्रों की रुचियों को जाग्रत करना परमावश्यक है। अध्यापक को चाहिए कि वह स्वयं भी इनको पढ़े व समय-समय पर छात्रों को भी इन्हें पढ़ने हेतु प्रेरित करे।

(स) समाचार-पत्र (News-paper)—नागरिकशास्त्र में समाचार-पत्रों का महत्वपूर्ण स्थान है चूँकि यह देश की वर्तमान सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक परिस्थितियों को समन्वित करते हैं और अनेकानेक प्रकार की सूचनाओं को स्वयं में निहित करते हैं।

कुछ विद्वानों का विचार है कि पाठ्य-पुस्तक में प्रस्तुत ज्ञान पुरातन होता है और समाचार-पत्रों में हम आधुनिक क्रियाकलापों या गतिविधियों से सम्बन्धित ज्ञान को प्रस्तुत करते हैं। यह ज्ञात से अज्ञात व सरल से कठिन की ओर उन्मुख होने का सशक्त माध्यम है।

समाचार-पत्रों का प्रयोग कैसे करें ?—

1. समाचार-पत्रों का प्रयोग किसी समय-विशेष पर न करके प्रतिदिन सीखने की एक प्रक्रिया के रूप में किया जाना चाहिये।

2. विद्यालय में एक बुलेटिन बोर्ड हो जिस पर प्रतिदिन का समाचार-पत्र छात्रों के पढ़ने हेतु रखा जाये।

Scanned with CamScan

3. समाचार-पत्र के प्रमुख अंशों को छात्रों ने पढ़ लिया है अथवा नहीं, इसकी जानकारी विभिन्न माध्यमों से की जाये।

4. महत्त्वपूर्ण अंशों पर कक्षा में वाद-विवाद व विचार-विमर्श हो व छात्रों की राय लेने का प्रयास भी किया जाये।

5. किसी विशिष्ट समाचार से सम्बन्धित समाचार मानचित्र का प्रयोग भी किया जाये, जैसे—राम मन्दिर-बाबरी मस्जिद विवाद को लेकर इसका प्रयोग किया जा सकता है।

2. **दृश्य सहायक सामग्री** (Visual Material Aids)—दृश्य सामग्री वह है जो हमारी दृश्य इन्द्रियों का प्रयोग करती है। इसके अन्तर्गत हम निम्न सामग्रियों को सम्मिलित करते हैं—

(अ) वास्तविक पदार्थ (Real Objects)—नागरिकशास्त्र विषय में कुछ प्रकरण ऐसे हैं जिनका हम छात्रों को प्रत्येक्ष दर्शन करा सकते हैं। जब किसी भी ज्ञान को स्पष्ट करने हेतु उसे वास्तविक परिस्थितियों से सम्बन्धित किया जाता है तो वह ज्ञान रोचक, लाभप्रद, सरल व स्थायी होता है। हम ग्राम पंचायत, नगर की सफाई आदि का ज्ञान कराने हेतु इसका प्रयोग करते हैं। इसके लिए हमें छात्रों को ग्राम पंचायत की मीटिंग में ले जाना होगा व वहाँ होने वाली कार्यवाही को छात्र अवलोकित करेंगे व ग्राम पंचायत की गतिविधियों का ज्ञान लेंगे।

(ब) चित्र (Pictures)—चित्र का उपयोग निम्न है—

1. चित्रों के माध्यम से हम नागरिकशास्त्र के शिक्षण को वास्तविक मनोरंजक व स्पष्टता प्रदान करते हैं।
2. चित्र छात्रों की कल्पना शक्ति का विकास करते हैं।
3. इनके द्वारा प्रस्तुत किया गया ज्ञान अधिक स्थायी होता है।
4. यह छात्रों की निरीक्षण शक्ति को विकसित करते हैं।
5. यह यथार्थ वातावरण का सृजन करते हैं।

इसका प्रयोग कैसे करें ?—

1. इसको जुटाने हेतु अध्यापक को अधिक धन व्यय नहीं करना चाहिए। समाचार-पत्रों व पत्रिकाओं से इसे संग्रहित कर लेना चाहिए।
2. चित्रों का चयन बहुत ही सावधानी के साथ किया जाना चाहिए।
3. चित्र उद्देश्यपूर्ण, सार्थक व महत्त्वपूर्ण हों।
4. चित्र का आकार कक्षा के छात्रों की संख्या के अनुकूल हो।
5. चित्र दिखाकर रख देना ठीक नहीं। उस चित्र के बारे में संक्षिप्त टिप्पणी अध्यापक द्वारा दी जानी चाहिये।
6. जहाँ तक हो, सरल व बोधगम्य चित्रों का उपयोग करें।
7. चित्र नवीनतम, पूर्ण तथा ठीक हों।
8. कक्षा में उसे यथास्थल टाँगा जाये।
9. पाठ के विकास में चित्र सहयोग दे, इस कारण उसका यथास्थल प्रयोग हो।
10. चित्र के ऊपर छात्रों से प्रश्न पूछने चाहिये।

Scanned with CamScanner

11. उद्देश्य पूर्ण होने पर चित्र उतार देना चाहिए।

12. चित्र की रचना कक्षा के स्तर के अनुकूल आकर्षक हो।

13. नवीन पाठ की प्रस्तावना हेतु इनका प्रयोग कर सकते हैं।

14. मुख्य बिन्दुओं या तथ्यों को स्पष्ट करने हेतु भी इनका प्रयोग कर सकते हैं।

(स) मानचित्र (Map) – मानचित्र इस धरातल को समतल रूप में प्रस्तुत करता है जिसमें प्रस्तुतीकरण हेतु पंक्तियों, संकेतों, शब्दों व रंगों का प्रयोग किया जाता है। वास्तव में देखा जाये तो मानचित्र की सहायता से हम विभिन्न स्थानों का क्षेत्रफल, स्थिति, उपज, जलवायु, जनसंख्या व तापक्रम आदि को प्रस्तुत करते हैं।

मानचित्र के प्रकार—

1. मौसम सम्बन्धी मानचित्र (Weather Maps),
2. भौतिक मानचित्र (Physical Maps),
3. राजनैतिक मानचित्र (Political Maps),
4. ऐतिहासिक मानचित्र (Historical Map),
5. वर्षा सम्बन्धी मानचित्र (Rainfall Map),
6. जनसंख्या सम्बन्धी मानचित्र (Population Map),
7. उपज सम्बन्धी मानचित्र (Vegetation Map),
8. परिवहन सम्बन्धी मानचित्र (Transportation Map)।

मानचित्र का प्रयोग कैसे करें ?—

1. मानचित्र को बहुत सघन नहीं बनाना चाहिए चूँकि इससे मानचित्र की स्पष्टता व बोधगम्यता समाप्त हो जाती है।

2. मानचित्र इतना बड़ा अवश्य होना चाहिए कि कक्षा के सभी स्थलों से उसे स्पष्ट रूप में देखा जा सके।

3. मानचित्र आसानीपूर्वक समझा जा सके, इसके लिए यह जरूरी है कि उसमें जो संकेत प्रयोग किये जायें, वह छात्रों को बता दिये जायें।

4. जिस मापन प्रणाली का प्रयोग मानचित्र में किया गया हो, उसकी भी जानकारी बच्चों को दी जानी चाहिए।

5. मानचित्र का प्रयोग उचित ढंग से यथास्थल किया जाना चाहिये। उसे पाठ्यवस्तु के एक अभिन्न रूप में प्रयोग किया जाना चाहिए।

6. मानचित्र को उपयुक्त स्थान पर टाँगना चाहिए। इसे श्यामपट पर नहीं टाँगना चाहिए।

7. मानचित्र की शुद्धता सदैव बनी रहनी चाहिए।

8. उस पर किसी भी वस्तु या स्थान को दर्शाने हेतु संकेतक का प्रयोग करना चाहिये।

Scanned with CamScanner

मानचित्र के प्रयोग से लाभ—

1. यह किसी भी स्थान की स्थिति व एक स्थान की दूसरे स्थान से दूरी बताने में सहायता करते हैं।

2. यह विभिन्न स्थानों पर होने वाली वर्षा, तापक्रम, जलवायु, ऋतु परिवर्तन आदि का भी ज्ञान कराते हैं।

3. धरातल ज्ञान मानचित्र के आधार पर हम किसी स्थान की ऊँचाई, नीचाई, नदियों, पर्वतों आदि का सही अनुमान लगा सकते हैं।

4. यह देश के रेलमार्गों, वायुमार्गों आदि का भी ज्ञान देते हैं।

(द) **रेखाचित्र** (Diagrams)—किसी वस्तु को स्पष्ट करने हेतु जब हम रेखाओं का प्रयोग करते हैं तो वह रेखाचित्र कहा जाता है। रेखाचित्र कक्षा शिक्षण के दौरान ही श्यामपट पर चित्रित किये जाते हैं। एक अच्छा रेखाचित्र बहुत ही स्पष्ट व सरल होता है। हम यदि रेखाचित्र को कक्षा में प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना चाहते हैं तो हमें इसका निर्माण सतर्कता के साथ करना चाहिए। एक अच्छे रेखाचित्र में दो विशेषताओं का होना जरूरी है—

1. यह तकनीकी दृष्टि से सही होना चाहिए व स्वच्छ तथा स्पष्ट हो। इसका आधार उचित हो, उसमें उसका शीर्षक दिया हो। विभिन्न अंगों का नामांकन हो व सभी बातों की उचित व्याख्या कर दी जानी चाहिये। किसी भी तथ्य को कल्पना के भरोसे नहीं छोड़ देना चाहिए।

2. इसे कलात्मक रूप में निर्मित करना चाहिये। उसके प्रयोग हेतु पैमाने आदि का प्रयोग करना चाहिए।

(य) **चार्ट** (Chart)—चार्ट वह है जिसमें तथ्यों व चित्रों का समन्वय होता है। छात्रों को सुगम रूप से ज्ञान प्रदान किया जाता है। इसके द्वारा छात्र तथ्यों व विचारों में सम्बन्ध देखने का प्रयास करता है।

चार्ट के प्रकार

1. वर्गीकृत चार्ट (Classified Chart),
2. जैवकीय चार्ट (Geneology Chart),
3. धारा चार्ट (Flow Chart),
4. सम्बन्ध चार्ट (Relationship Chart),
5. तालिका चार्ट (Table Chart),
6. समय चार्ट (Time Chart),
7. संगठन चार्ट (Organization Chart),
8. ग्राफिकल चार्ट (Graphical Chart),
9. चित्र सम्बन्धी चार्ट (Picture Chart),
10. आँकड़ों सम्बन्धी चार्ट (Tabulation Chart)।

Scanned with CamScan

इनका प्रयोग कैसे करें ?—

1. चार्ट किसी विशिष्ट उद्देश्य पर आधारित होना चाहिए। एक चार्ट में एक ही उद्देश्य निहित होना चाहिए।

2. चार्ट का आकार कक्षा के छात्रों की संख्या के अनुकूल होना चाहिए।

3. चार्ट का प्रयोग यथास्थल होना चाहिए।

4. इसके प्रयोग के द्वारा पाठ का विकास होना चाहिए।

5. चार्ट को प्रयोग के बाद उतार देना चाहिए।

(र) पोस्टर (Poster)—पोस्टर वस्तुओं, व्यक्तियों व स्थानों का ज्ञान देते हैं। यह विचारों या भावों की चित्रात्मक अभिव्यक्ति है। पोस्टर के माध्यम से हम विषय-वस्तु को रोचक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं। पोस्टर का प्रभाव छात्रों पर बहुत अधिक होता है।

इसका प्रयोग कैसे करें ?—

1. पोस्टर किसी विशिष्ट शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक होने चाहिए।

2. पोस्टर के माध्यम से छात्रों के व्यवहार में अपेक्षित व्यवहार आना चाहिए।

3. पोस्टर के माध्यम से छात्रों के संवेगों को उभारने का प्रयास होना चाहिए।

4. पोस्टर का आकार कक्षा के आकार के अनुकूल होना चाहिए।

5. बहुत अधिक महँगे पोस्टर का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(ल) प्रतिमान (Model)—मॉडल का अभिप्राय है किसी भी वस्तु की ऐसी प्रतिमा बनाना जिससे कि वह सत्य का आभास दे सके और यह छात्रों की जिज्ञासा को सन्तुष्ट कर सके। वास्तव में मॉडल का प्रयोग उस स्थिति में किया जाता है जब वास्तविक पदार्थ बहुत बड़े होते हैं और वह उपलब्ध नहीं कराये जा सकते व चित्र द्वारा हम उनके वास्तविक प्रारूप को प्रस्तुत नहीं कर सकते। उदाहरणार्थ, इग्लू का मॉडल, वायुयान का मॉडल।

इसका प्रयोग कैसे करें ?—

(1) मॉडल को वास्तविक पदार्थ का वास्तविक प्रतिरूप होना चाहिए।

(2) मॉडल बहुत अधिक महँगे नहीं होने चाहिए।

(3) कक्षा में मॉडल ऐसे स्थान पर रखना चाहिए कि उन्हें सभी छात्र देख सकें।

(4) इनकी सहायता से पाठ का विकास किया जाना चाहिए।

(व) बुलेटिन बोर्ड (Bulletin Board)—इस बोर्ड पर विद्वानों के विचारों, महत्त्वपूर्ण समाचारों, सूचनाओं व चित्रों को अंकित किया जाता है। यह बोर्ड विद्यालय में उस स्थान पर लगाना चाहिए जहाँ पर आते-जाते छात्रों की नजर पड़ सके।

इसका प्रयोग कैसे करें ?—

1. छात्र इसे रोज देखें, इसे इस प्रकार से रखा जाना चाहिए।

2. इसे आकर्षक होना चाहिए।

3. इसमें बहुत अधिक सूचनायें भरकर इसे खिचपिच नहीं कर देना चाहिए।

Scanned with CamScan

4. इस पर कुछ अच्छे वाक्य प्रतिदिन लिखे जाने चाहिये।

5. बच्चों को भी यह उत्तरदायित्व देना चाहिए। वह स्वयं इस पर कुछ न कुछ लिखें।

6. प्रत्येक समाचार का उचित शीर्षक होना चाहिए।

7. प्रदर्शित सामग्री रोचक हो।

8. इसे आकर्षक बनाने का पूर्ण प्रयास होना चाहिए।

(श) फ्लेनल बोर्ड (Flannel Board)– इसे फैल्ट बोर्ड (Felt Board) भी कहा जाता है। यह भारी बोर्ड से बना होता है जिस पर फ्लेनल या खादी का कपड़ा चिपका दिया जाता है। इसके प्रयोग के लिए कार्ड बोर्ड के छोटे-छोटे टुकड़ों पर चित्र तैयार करते हैं जिनके पीछे रेगमाल लगा देते हैं और जिन्हें फ्लेनल बोर्ड पर लगा देते हैं।

इसका प्रयोग कैसे करें ?–

1. इस पर लगाने हेतु जो चित्र तैयार किये जायें, उनका आकर्षक होना जरूरी है।

2. चित्र क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित किये जाने चाहिए।

3. चित्र का आकार फ्लैनल बोर्ड के अनुकूल होना चाहिए।

4. फ्लेनल बोर्ड ऐसे स्थान पर रखा जाये जो कक्षा के सभी छात्र उसे देख सकें।

(स) ग्लोब (Globe)– यह भूमि का सर्वाधिक सही प्रतिनिधित्व करता है चूँकि भूमि गोल होती है और ग्लोब भी गोल होता है, ग्लोब के द्वारा हमें पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र, तारे, ग्रहों आदि का ज्ञान होता है। वास्तव में यह विश्व का अति लघु रूप है।

ग्लोब के प्रकार–

1. राजनैतिक ग्लोब (Political Globe),

2. भौतिक ग्लोब (Physical Globe),

3. राजकीय रूपरेखा ग्लोब (Stated Outline Globe)।

इसका प्रयोग कैसे करें ?–

1. ग्लोब कक्षा में ऐसे स्थान पर रखा हो जहाँ छात्र उसे देख सकें।

2. छात्रों को ग्लोब का अध्ययन कराने हेतु उसके समीप बुलाना चाहिए।

(ह) ग्राफ (Graph)– इसके द्वारा हम संख्यात्मक आँकड़ों को दृश्यात्मक रूप में प्रस्तुत करते हैं। इनके माध्यम से सम्बन्धों एवं विकास के प्रदर्शन के साथ-साथ तुलनात्मक अध्ययन को प्रस्तुत किया जाता है।

ग्राफ के प्रकार–

1. **लाइन ग्राफ** (Line Graph)–

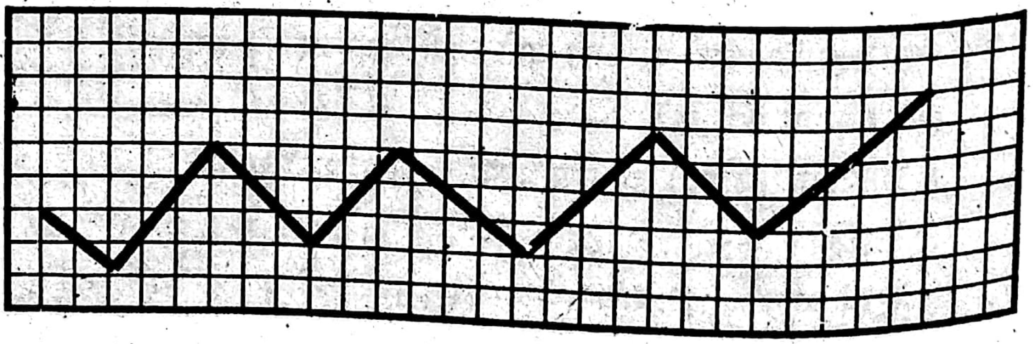

Scanned with CamScanner

2. **लम्बे ग्राफ** (Bar Graph) –

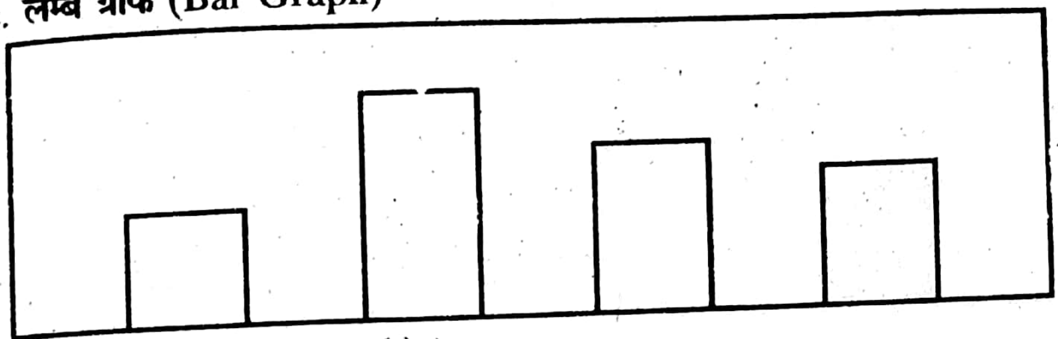

3. **वृत्त ग्राफ** (Circle Graph)।

4. **चित्र ग्राफ** (Picture Graph) – इसमें हम चित्रों का प्रयोग करके उसे आकर्षक बनाते हैं।

इसका प्रयोग कैसे करें ?–

1. सिर्फ प्रदर्शन करके इसे छोड़ना नहीं चाहिए। इसकी उपयुक्त व्याख्या की जानी चाहिए।

2. इसका आकार उपयुक्त होना चाहिए।

3. इसको पैमाने की सहायता से शुद्ध व स्पष्ट बनाना चाहिए।

3. **यान्त्रिक सामग्री** (Mechanical Material Aid) –

(अ) श्रव्य सहायक सामग्री (Audio-material Aid) –

(i) **रेडियो** (Radio) – जार्ज वाटसन ने कहा कि "रेडियो स्वयं शिक्षा है।" प्रसिद्ध विद्वान सैयद जहीर का विचार है कि "रेडियो ने शिक्षण तथा अधिगम की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण सहायता प्रदान की है और जैसे-जैसे हमारे साधन बढ़ते जायेंगे, वैसे ही हम प्रत्येक स्तर पर अध्यापक के लिए इस सामग्री को उपलब्ध बना देंगे।" बाइनिंग एवं बाइनिंग का विचार है कि "रेडियो कक्षा-शिक्षण का सहयोगी है व यह अध्यापक एवं छात्रों के सामान्य ज्ञान का विस्तार करता है और पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु को नवीन ढंग से व्यवस्थित करता है।"

वास्तव में रेडियो के माध्यम से हम पाठ्यक्रम को नवीन जीवन प्रदान करते हैं व पाठ का सम्बन्ध सीखने वाले की आवश्यकताओं व वातावरण से स्थापित करते हैं।

रेडियो का प्रयोग कैसे करें ?–

1. प्रसारण से पूर्व अध्यापक को पाठ के बारे में पूर्ण जानकारी होनी चाहिए।

2. रेडियो नागरिकशास्त्र के कक्ष में ही होना चाहिए।

3. रेडियो प्रसारण के समय कक्षा में शान्त वातावरण होना चाहिए।

4. प्रसारण के बाद उस प्रकरण पर छात्रों व अध्यापकों के मध्य परस्पर वाद-विवाद होना चाहिए।

5. पाठ में शुद्धता होनी चाहिए।

रेडियो की उपयोगिता–

1. यह दूरस्थ जगहों तक पहुँचकर छात्रों का ज्ञानार्जन करता है।

2. यह ज्ञान प्रदान करने का अत्यधिक मितव्ययी साधन है।

Scanned with CamScanner

3. यह छात्रों को नवीनतम घटनाओं के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करता है।

4. इसके द्वारा छात्रों में सहभागिता का भाव उत्पन्न होता है।

बाधायें—

1. यह शिक्षण का एक तरफीय साधन है। इसमें शिक्षक व विद्यार्थी के मध्य अन्तःक्रिया सम्भव नहीं है।

2. छात्र वही सुनेंगे जो वह सुनना चाहेंगे। बाकी समय वह निजी क्रियाओं में व्यस्त रहेंगे।

(ii) **टेपरिकार्डर** (Tape-Recorder) – टेपरिकार्डर की सहायता से हम रेडियो पाठ की सीमाओं को दूर कर सकते हैं। शिक्षण सम्बन्धी कैसेट विशेषज्ञों द्वारा तैयार किये जाते हैं जो नागरिकशास्त्र कक्ष में रखे होते हैं और समयानुसार उनका प्रयोग होता है। इन्हें बीच-बीच में बन्द कर सकते हैं व प्रस्तुत किये गये अंश पर विचार-विमर्श किया जा सकता है।

इसका प्रयोग कैसे करें ?—

1. टेप लगाकर छोड़ देना अनुचित है अध्यापक को वहाँ खड़ा रहना चाहिए व बीच-बीच में टेपरिकार्डर बन्द करके उस पर विचार-विमर्श होना चाहिए।

2. टेपरिकार्डर चलाने से पूर्व उसका उद्देश्य छात्रों को विदित होना चाहिए।

3. टेपरिकार्डर चलाने से पूर्व कक्षा में पूर्ण शान्ति होनी चाहिए।

(iii) **अध्यापन यन्त्र** (Teaching Machine) – अध्यापन यन्त्र वस्तुतः एक विद्युत युक्ति है जिसका संचालन छात्रों द्वारा किया जाता है। वास्तव में अध्यापन यन्त्र ऐसे स्वचालित या कुछ अंशों में स्वचालित युक्तियाँ हैं जो प्रश्न या एक उद्दीपन को दूसरा उद्दीपन प्रस्तुत करते हैं, जवाब देने का साधन उपलब्ध कराते हैं और जवाब मिलने के तुरन्त बाद उसके सही होने की जानकारी प्रदान करते हैं। **जी. सी. फरूको** के अनुसार, "अध्यापन यन्त्र विषय को पूर्व निश्चित क्रम के अनुसार प्रस्तुत करते हैं। छात्र को जवाब देने का अवसर देते हैं और उसे तुरन्त प्रतिपुष्टि देते हैं।"

इसकी उपयोगिता—

1. यह अध्यापक के सहयोग के बिना छात्रों को शिक्षण देता है व उनका ज्ञानार्जन करता है।

2. इसके द्वारा सीखने की प्रक्रिया में छात्र सक्रिय रहते हैं।

3. यह बिजली के भंग होने पर हाथ द्वारा भी संचालित किया जा सकता है।

4. छात्र का उत्तर सही है या गलत, यन्त्र द्वारा इसकी जानकारी भी दी जाती है।

(ब) दृश्य सहायक सामग्री (Visual Material Aid) –

(i) **प्रोजेक्टर** (Projector) – इसे मैजिक लैण्टर्न (Magic Lantern) अर्थात् जादू की लालटेन या स्लाइड प्रोजेक्टर भी कहा जाता है। इसके द्वारा स्लाइड को बड़ी आकृति के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इनके सहयोग द्वारा हम विभिन्न स्लाइड छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करके उनके ज्ञान में अभिवृद्धि करते हैं।

Scanned with CamScanner

इसकी उपयोगिता—

1. छोटे बच्चों के शिक्षण हेतु यह अधिक उपयोगी है।

2. यह पाठ को रोचक बनाती है।

3. इसे कक्षा में कहीं पर भी प्रयोग किया जा सकता है।

4. बालक को अध्यापक द्वारा स्लाइड का उद्देश्य बता दिया जाता है जिससे बालक ज्ञानार्जन हेतु तत्पर हो जाते हैं।

(ii) **एपिडाइस्कोप** (Epediascope)—इसके लिए अध्यापक अपारदर्शी वस्तु को सीधे पर्दे पर ले जाता है। इसके लिए स्लाइड बनाने की जरूरत नहीं होती है। छात्रों के समक्ष नागरिकशास्त्र के कई प्रकरण सुगमता के साथ इसके माध्यम से प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

इसका प्रयोग कैसे करें—

1. चित्र जो भी प्रस्तुत करने हैं, उनकी पूर्ण जानकारी अध्यापक को होनी चाहिए।

2. चित्र प्रस्तुत करने में छात्रों का भी सहयोग लेना चाहिए।

(iii) **फिल्म स्ट्रिप्स** (Film Strips)—इसमें किसी भी प्रकरण से सम्बन्धित फिल्म पट्टियों को क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित किया जाता है। फिल्मी पट्टियाँ इस प्रकार प्रस्तुत होनी चाहिए जिससे ज्ञान को क्रमबद्ध रूप में छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जा सके।

इसका प्रयोग कैसे करें ?—

1. इसके द्वारा छात्रों की मानसिक क्रियाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

2. यह पाठ के विकास में सहयोगी होनी चाहिए।

3. यह ज्ञान प्रदान करने का मितव्ययी साधन है।

4. इसके प्रयोग के पश्चात् अध्यापक द्वारा इसकी व्याख्या की जानी चाहिए।

(स) श्रव्य-दृश्य सहायक सामग्री (Audio-visual Material Aid)—श्रव्य-दृश्य सामग्री पर अच्छे शिक्षण की आधारशिला टिकी हुई है। इनके महत्त्व के सम्बन्ध में फ्रांसिस **डब्लू. नोयल** का विचार है कि "अच्छे अनुदेशन किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम की आधारशिला हैं जिसमें श्रव्य-दृश्य सामग्री उस आधारशिला का एक कल-पुर्जा है।"

मेकोन व रॉबर्ट्स के अनुसार, "शिक्षक इन उपकरणों के प्रयोग द्वारा बालक की एक से अधिक इन्द्रियों को प्रयोग में लाकर पाठ्य-वस्तु को सरल, रोचक, स्पष्ट व स्थायी बनाता है।"

(i) **दूरदर्शन** (Television)—**थट व गेरबेरिच** के अनुसार, "दूरदर्शन सबसे अधिक आशापूर्ण श्रव्य-दृश्य उपकरण है क्योंकि सन्देशवाहन के इस एक यन्त्र में रेडियो तथा चलचित्र के गुणों का सम्मिश्रण है।"

शिक्षा जगत में इसे "Blackboard dramatized, the picture brought of life" भी कहा जाता है। इसके द्वारा हम छात्रों के समक्ष जो भी ज्ञान प्रस्तुत करते हैं, उसको ग्रहण करने में वह अपने दृश्य व श्रवण इन्द्रियों का प्रयोग करते हैं।

Scanned with CamScan

टी. वी. पाठ के विभिन्न सोपान—

1. तैयारी (Preparation),
2. प्रस्तुतीकरण (Presentation),
3. वाद-विवाद (Discussion),
4. अनुप्रयोग (Application) ।

सीमायें—

1. इसमें विचारों का परस्पर आदान-प्रदान कर पाना असम्भव है ।
2. इस पाठ में गतिशीलता कम होती है व बच्चों के लिए भी यह व्यावहारिक नहीं।
3. इन पाठों को तैयार करने में समय व धन अधिक लगता है ।

(ii) **वीडियो कैसेट रिकार्डर** (V. C. R.)– आज के युग में वी. सी. आर. का भी विस्तार बहुत ही तीव्र गति से हो रहा है और परिणामस्वरूप वी. सी. आर. सिर्फ मनोरंजन का साधन ही नहीं रह गया वरन् यह छात्रों को ज्ञान प्रदान करने का भी एक महत्त्वपूर्ण साधन बन गया है। इसका लाभ यह है कि छात्र इन्हें अपनी सुविधानुसार चला सकता है और कोई भी बिन्दु यदि वह एक बार समझ नहीं पाया है तो उसकी पुनरावृत्ति कर सकता है ।

इसकी उपयोगिता—

1. इससे छात्रों की कल्पना व निरीक्षण शक्ति का विकास होता है ।
2. इसके द्वारा प्राप्त किया गया ज्ञान अधिक स्थायी होता है ।
3. मन्द बुद्धि वाले छात्रों के लिए यह बहुत ही उपयोगी है ।
4. यह एक प्रकार से प्रत्यक्ष ज्ञान प्रदान करते हैं ।

दूरदर्शन पाठ तथा वी. सी. आर. कैसेट के निर्माण की दृष्टि से भारतवर्ष में इस समय राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् (NCERT), इन्दिरा गाँधी खुले विश्वविद्यालय (IGNOU) तथा केन्द्रीय प्रौद्योगिक शिक्षण संस्थान (CIET) अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं ।

(iii) **नाटक** (Dramatization)– नागरिकशास्त्र में किसी भी घटना, चरित्र, विचारों व भावों पर नाटक विधि को अपनाना बहुत ही महत्त्वपूर्ण है । चूँकि इनको हम भौतिक आकृति के द्वारा अथवा अन्य किसी शिक्षण सामग्री के द्वारा प्रस्तुत नहीं कर सकते हैं । नागरिकशास्त्र शिक्षण में नाटक का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है ।

इसकी उपयोगिता—

1. यह भूत या भविष्य की परिस्थितियों को क्रियात्मक रूप में प्रस्तुत करता है ।
2. इसके द्वारा पाठ को रोचक बनाया जा सकता है ।
3. यह करके सीखने के सिद्धान्त पर आधारित है ।
4. यह बालकों के भावों व कल्पनाओं की सन्तुष्टि करता है ।

Scanned with CamScanner

5. यह शिक्षण को सजीव व सार्थक रूप प्रदान करता है।

6. इसके द्वारा समय व स्थान सम्बन्धी बाधक तत्त्वों पर विजय प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।

इसका प्रयोग कैसे करें ?—

1. अध्यापक को बालकों की गतिविधियों पर बहुत अधिक आधिपत्य नहीं रखना चाहिए।
2. अध्यापक द्वारा चरित्रों का चयन बहुत ही सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए।
3. कक्षा में स्टेज बनाने या पर्दे लगाने की कोई आवश्यकता नहीं है।
4. आवश्यक स्थान का चयन कर लेना चाहिए।
5. यथास्थल अध्यापक द्वारा भूमिका या स्पष्टीकरण दिया जाना चाहिए।

(iv) **चलचित्र** (Motion Pictures)—**क्रो एण्ड क्रो** के अनुसार, "चलचित्र का शैक्षिक महत्त्व इसलिए है क्योंकि वह गति को व्यक्त करते हैं, विचार व कार्य के अन्दर निरन्तरता का विकास करते हैं, मानव क्षेत्र की सीमाओं की पूर्ति करते हैं और अपने प्रस्तुतीकरण में प्रारम्भ से अन्त तक एक से रहते हैं।" चलचित्र आज शिक्षण का बहुत ही सशक्त साधन है। भारत में बालचित्र निर्माण समिति बालकों के लिए प्रतिवर्ष अनेकों शिक्षाप्रद समस्याओं को लेकर फिल्म बना रही है।

इसका प्रयोग कैसे करें ?—

1. फिल्म छात्रों की आयु, योग्यता व रुचि के अनुरूप हो।
2. यह पाठ के विकास में सहयोगी होनी चाहिए।
3. यह प्रामाणिक होनी चाहिए।
4. इसमें प्रयुक्त भाषा सरल, सुबोध व संयत होनी चाहिए।
5. फोटोग्राफी कल्पनात्मक होनी चाहिए।
6. कथावस्तु मनोरंजक व शिक्षाप्रद हो।
7. पात्र आकर्षक व चरित्रानुसार चयनित हों।

चलचित्र के लाभ—

1. यह पाठ को रोचक व सजीव बनाते हैं।
2. इसके द्वारा छात्रों की ग्राह्य व कल्पना शक्ति का विकास होता है।
3. यह छात्रों को शिक्षा प्रदान करते हैं।
4. इनके द्वारा छात्रों को स्वाध्याय के लिए प्रोत्साहन मिलता है।
5. यह नवीन पाठ को प्रारम्भ करने में सहायता देते हैं।
6. मन्द बुद्धि वाले छात्रों के लिए यह बहुत ही उपयोगी होते हैं।

4. **अन्य सहायक सामग्रियाँ** (Other Material Aids)—

(अ) **भ्रमण** (Excursion)—इसका आशय है कि विद्यालय की चारदिवारी से परे शिक्षण देना। शिक्षण की प्रक्रिया में भ्रमण या पर्यटन का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। इसके द्वारा

Scanned with CamScanner

छात्रों को प्रत्यक्ष अनुभव के अवसर प्राप्त होते हैं। कुछ लोगों का विचार यह है कि इसमें हम विद्यालय की दीवारों का विस्तार कर देते हैं (Walls of the school must be expanded)। तात्पर्य यह है कि शिक्षण कार्य विद्यालय की सीमाओं से अलग दिया जाता है। **जैक एलन** के अनुसार, "यात्रायें प्रत्यक्ष.अनुभव के अवसर प्रदान करती हैं व विद्यालय व शिक्षण के सम्बन्धों को वास्तविकता प्रदान करती हैं।"

भ्रमण के प्रकार—

1. एक दिन का भ्रमण (One day Excursion),
2. सप्ताहान्त भ्रमण (Week end Excursion),
3. सामयिक भ्रमण (Terminal Excursion),
4. परीक्षा समाप्ति पर भ्रमण (Post Examination Excursion)।

भ्रमण के लाभ—

1. यह प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करते हैं।
2. इनके द्वारा विद्यालय जीवन का समाज से सम्बन्ध स्थापित किया जाता है।
3. छात्रों की निरीक्षण व दूरदृष्टि का विकास किया जा सकता है।
4. अध्ययन हेतु छात्रों को बहुत सामग्री मिल जाती है।
5. इनके द्वारा बालकों में पढ़ने के प्रति रुचि जाग्रत की जा सकती है।
6. बालकों में सहयोग की भावना उत्पन्न की जा सकती है।
7. बच्चे भ्रमण आदि क्रियाओं को संगठित करके कार्य-विभाजन व उत्तरदायित्व के गुण को सीख जाते हैं।
8. विषय के प्रति उचित दृष्टिकोण का विकास किया जा सकता है।
9. इसके द्वारा छात्रों में उचित मानवीय सम्बन्धों को जाग्रत किया जा सकता है।
10. यह छात्रों के सामान्य ज्ञान में वृद्धि करता है।

भ्रमण कैसे संगठित किया जाये ?—

1. भ्रमण से पूर्व उसका उद्देश्य क्या है, यह अध्यापक व छात्र दोनों को पता होना चाहिए।

2. भ्रमण सुनियोजित होना चाहिए। हर स्तर के ऊपर अध्यापक को विचार कर लेना चाहिए।

3. जहाँ जाना है, वहाँ प्रवेश की अनुमति सम्बन्धित अधिकारियों से प्राप्त कर लेनी चाहिये।

4. यह व्यवस्था निश्चित होनी चाहिये, यथा—तिथि, समय, छात्रों का स्थान, जाने का साधन, अध्यापकों की संख्या, भ्रमण का उद्देश्य, व्यय की व्यवस्था, सामान जो ले जाना है, वहाँ ठहरने की व्यवस्था आदि।

Scanned with CamScan

5. प्रत्येक छात्र के लिए उचित निदेशिका होनी चाहिए।

6. उस स्थान का पूर्व अवलोकन अध्यापक द्वारा कर लेना चाहिए जिससे बैठने, पानी पीने आदि की व्यवस्था ठीक हो सके।

7. बालकों को बिना किसी आधार के समूहों में बाँट देना चाहिए व प्रत्येक समूह का नायक बना देना चाहिए।

8. समय की पाबन्दी का अनुशीलन करना चाहिए।

9. समय-समय पर अध्यापक द्वारा छात्रों का ज्ञानवर्द्धन किया जाना चाहिए।

10. अध्यापक द्वारा छात्रों की शंकाओं का भी समाधान किया जाना चाहिए।

11. अध्यापक द्वारा छात्रों को यह निर्देश देना चाहिए कि वह डायरी, पेन अपने पास रखें जिससे वह उपयुक्त बातें नोट कर लें।

12. अध्यापक को छात्रों से बीच-बीच में प्रश्न करते रहना चाहिए।

(ब) प्रदर्शनी (Exhibition)—इसमें हम छात्रों के सहयोग से निर्मित वस्तुओं को एक स्थान पर संगठित करके सजाते हैं। यह प्रदर्शनी दो प्रकार से लगाई जा सकती है—

1. कक्षा स्तर पर,
2. विद्यालय स्तर पर।

प्रदर्शनी कैसे लगायें ?—

1. इसमें छात्रों द्वारा निर्मित वस्तुएँ ही रखी जानी चाहिए।
2. यह वस्तुयें विषय-विशेष से सम्बन्धित हों।
3. प्रदर्शनी में वह छात्र उस वस्तु के समीप रहें जिन्होंने वस्तु को बनाया है जिससे आवश्यकता पड़ने पर वह उसे समझा सकें।
4. प्रदर्शनी छात्रों के सहयोग से लगानी चाहिए।
5. प्रदर्शनी लगाने से पूर्व उसका उद्देश्य निश्चित होना चाहिए।
6. छात्रों द्वारा निर्मित वस्तुओं के प्रति प्रशंसात्मक भाव होना चाहिए।
7. सुधार हेतु सुझाव अध्यापक द्वारा अवश्य ही प्रस्तुत किये जाने चाहिए।

(स) संग्रहालय (Museum)—शिक्षण की आधुनिक विधि को सजीव बनाने व भूतकालीन तथ्यों से उसका सम्बन्ध स्थापित करने हेतु संग्रहालय एक महत्त्वपूर्ण साधन है। नागरिकशास्त्र के संग्रहालय में हम चित्र, आर्ट, मानचित्र, समाचार-पत्र, प्राचीन मूर्तियाँ, प्राचीन हस्तलेख, प्राचीन वेशभूषा, प्राचीन हथियार आदि को रखते हैं।

प्रश्न

1. सहायक सामग्री का क्या अर्थ है ? नागरिकशास्त्र शिक्षण में इसका क्या स्थान होना चाहिए ? बताइये।
2. नागरिकशास्त्र शिक्षण में श्रव्य-दृश्य सामग्री की क्या आवश्यकता है ? प्राथमिक स्तर पर अध्यापक को प्रायः किस प्रकार की सामग्री का उपयोग अधिक करना चाहिए ?

Scanned with CamScanner

3. "सहायक सामग्री पाठ को रोचक बनाती है।" आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं ? सहायक सामग्री का प्रयोग करते समय अध्यापक को किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए ?

4. नागरिकशास्त्र का अध्यापक प्रायः किस सामग्री का प्रयोग करता है ? किन्हीं दो का उल्लेख करते हुए उसकी विस्तृत व्याख्या करें।

5. श्रव्य-दृश्य सामग्री से आप क्या समझते हैं ? नागरिकशास्त्र शिक्षण में जिन श्रव्य-दृश्य सामग्री का प्रयोग करते हैं, उनकी विस्तृत व्याख्या करें।

6. श्रव्य सामग्री और दृश्य सामग्री का अर्थ बताइये। आपकी राय में कौन-सी सामग्री ज्यादा उपयोगी है ? तर्क सहित विवेचना करें।

7. नागरिकशास्त्र में निम्नलिखित के महत्त्व को स्पष्ट करें—
(अ) मॉडल,
(ब) चार्ट,
(स) श्यामपट।

8. नागरिकशास्त्र शिक्षण में समाचार-पत्रों के महत्त्व पर संक्षिप्त निबन्ध लिखें।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. "सीखने का कोई तरीका जिसमें छात्र अपनी श्रव्य व दृश्य इन्द्रियों का प्रयोग करता है, उन्हें हम श्रव्य-दृश्य सामग्री कहते हैं।" उपरोक्त कथन किसका है—
(अ) मोफॉत,
(ब) बाइनिंग व बाइनिंग,
(स) क्रो एण्ड क्रो,
(द) वेसले।

2. निम्नलिखित में जो कथन सत्य हैं, उनके समक्ष 'हाँ' लिखें व जो गलत हैं, उनके समक्ष 'नहीं' लिखें—
(अ) श्रव्य सामग्री में व्यक्ति अपनी आँखों का उपयोग करता है।
(ब) श्यामपट का प्रयोग शिक्षण बिन्दुओं को लिखने हेतु करते हैं।
(स) पाठ्य-पुस्तकें कोई भी व्यक्ति लिख सकता है।
(द) समाचार-पत्रों के महत्त्वपूर्ण अंशों पर कक्षा में वाद-विवाद होना चाहिए।
(य) अध्यापक को श्यामपट ढँकना नहीं चाहिए।
(र) शाब्दिक साधनों के अन्तर्गत मानचित्र आता है।
(ल) टेपरिकार्डर के प्रयोग से रेडियो की सीमाओं को दूर किया जा सकता है।
(व) चित्र प्रामाणिक होने चाहिए।
(श) फ्लैनल बोर्ड लकड़ी से तैयार किया जाता है।
(स) भ्रमण का उद्देश्य शैक्षिक होता है।

Scanned with CamScanner

3. रिक्त स्थान की पूर्ति करें—

(अ) शिक्षक को श्यामपट पर .... पंक्तियों में लिखना चाहिए।

(ब) श्रव्य सामग्री छात्रों की .... शक्ति का विकास करती है।

(स) पुस्तकों में .... संशोधन किया जाना चाहिए।

(द) पुस्तकें .... नहीं होतीं .... होती हैं।

(य) चित्र छात्रों की .... शक्ति का विकास करते हैं।

(र) चित्रों को .... टाँगा जाना चाहिए।

(ल) मानचित्र बहुत .... नहीं बनाना चाहिए।

(व) पोस्टर छात्रों के .... को उभारने का कार्य करता है।

(श) मॉडल को वास्तविक .... के अनुरूप होना चाहिए।

(स) ग्राफ में .... आँकड़े प्रस्तुत किये जाते हैं।

Scanned with CamScan